।। शांतिनिकेतनाष्टक ।।

प्रणमामि मां भुवनेश्वरीम्, भारतभूमौ सेविताम्।
कर्णाटकप्रान्तस्थिते शान्तिनिकेतन्निवासिनीम् ॥

जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन
अलकापुरी सा वैभव और सौंदर्य तेरा मन भावन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

उषाकाल में दिनकर, जगकर, स्वर्णिम किरणें लाता
शीतल पवन स्पर्श कर तन में , नवजीवन भर जाता
मनोहारी, हरीतिमा निहारी, सुखकर सम वृंदावन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

सजे शाम, जब दौड़ लगाते, बच्चे झूला झूलें,
हर्षित मन को करते बालक, प्राँगण में जब खेलें
क्रीड़ाँगन में, नन्हे नन्हे, यदुनंदन, रघुनन्दन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

झूम उठे जनपथ गणपथ बन, श्री गणेश जब आते
सजे हुए पंडाल और रस्ते, नव उमंग भर जाते
रंग मंच पर हिन्द सभ्यता, करती नर्तन गायन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

उत्सव मय प्रभु जगन्नाथ की रथ यात्रा है आती,
कृष्ण जन्म, माँ दुर्गा पावन, धर्म ध्वजा लहराती
तोरण, वन्दनवारों से लगे, देव लोक सा पावन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

लोहड़ी, ओणम, होली के रंग, नव यौवन बिखराए
पश्चिम के गुजरात का गरबा, प्रेम रंग बरसाए
कर्णाटक राज्योत्सव करता, मातृभूमि का वंदन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

नन्ही लहरें तरण ताल में, नर्तन करती जाती
स्फटिक शिला पर नील मणि सम, अद्भुत शोभा पाती
धवल धार निर्झर की गिरती, भरती हिय में स्पंदन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

अष्ट प्रहर, निशि दिन रक्षा में, तत्पर प्रहरी रहते
दुर्ग अभेद है ये ऐसा, सब निर्भय विचरण करते,
चोर, लुटेरे, खल, दानव नहीं, कर सकते हैं भेदन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

नाना रंगों, पुष्पों से, शोभित है धरा विहंगम
पूर्व, पश्चिम उत्तर दक्षिण, का है अद्भुत संगम
हे पुण्य भूमि तुझमें सबको मिलता है भारत दर्शन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

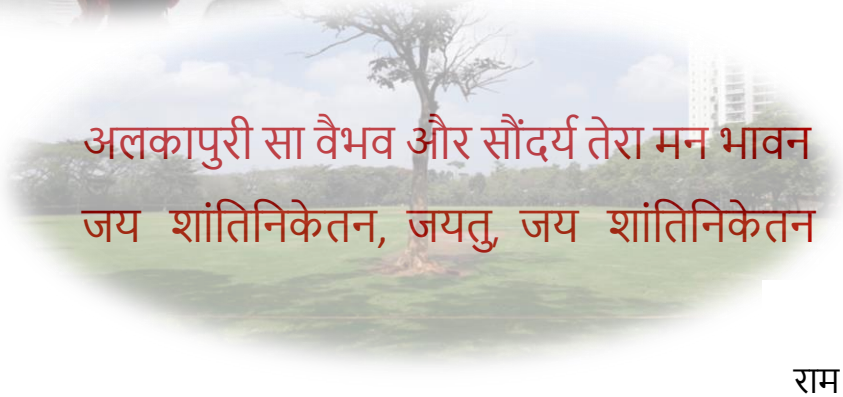

अलकापुरी सा वैभव और सौंदर्य तेरा मन भावन
जय शांतिनिकेतन, जयतु, जय शांतिनिकेतन

राम दयाल गोयल